The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 2 | February 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

मुण्डा जनजाति की महिलाओं की आर्थिक स्थिति : एक मानवशास्त्रीय अध्ययन

मंजु कन्डुलना

पी.एच.डी शोधार्थी, मानवशास्त्रा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड, manjukandulna88@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18976765

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 15-02-2026

Published: 10-03-2026

Keywords:

मुण्डा जनजाति, आर्थिक स्थिति, वनोपज, सरकारी योजनाएं, जनजातिय महिलाएं

ABSTRACT

वर्तमान में जनजातीय समुदाय झारखण्ड के लगभग सभी क्षेत्रों में पाए जाते हैं। ये प्रायः जंगल–झाड़, पहाड़–पर्वत और नदी–नालों से घिरे गाँवों व टोलों में निवास करते हैं। मुण्डा समुदाय मुख्यतः एक ग्रामीण खेतिहर समुदाय है, जिसका जीवन निर्वाह कृषि, वनोपज और प्राकृतिक पर्यावरणीय परिस्थितियों पर निर्भर करता है। कृषि कार्यों– बुवाई, रोपाई, कटाई तथा बीज संरक्षण में महिलाएँ सक्रिय भूमिका निभाती हैं। वनोपज संग्रह जैसे महुआ, साल पत्ता–बीज, जंगली फल, कंद–मूल और लकड़ी उनके घरेलू पोषण व आय का प्रमुख स्रोत हैं। पशुपालन, पत्तल–दोना निर्माण, बांस शिल्प तथा पारंपरिक पेय 'हड़िया' का निर्माण भी स्थानीय अर्थव्यवस्था में उनकी भागीदारी को दर्शाता है। फिर भी उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत नहीं है और वे संरचनात्मक, सामाजिक तथा संस्थागत समस्याओं से जूझती रहती हैं। इस शोध का उद्देश्य मुण्डा जनजाति की महिलाओं की आर्थिक स्थिति को समझना है वे आधुनिक समय में जीविकोपार्जन के लिए किस प्रकार संघर्ष करती हैं और व्यवसाय में आगे बढ़ने का प्रयास करती हैं। विशेषकर बानो प्रखण्ड की महिलाएँ परिवार के पालन–पोषण हेतु कठिन परिश्रम करती हैं। वे वनोपज संग्रह के साथ अपने बगानबारी में उगाई गई सब्जियाँ–आलू, मटर, प्याज, गोभी, बैंगन, बोदी, मूली, पालक आदि–स्थानीय बाजारों में बेचती हैं। कई महिलाएँ इन्हें बानो से लगभग 100 किलोमीटर दूर रांची के बाजारों में बस और ट्रेन से ले जाकर भी बेचती हैं, जिससे बच्चों की शिक्षा शुल्क और परिवार का खर्च चलता है। इस प्रक्रिया में उन्हें स्वास्थ्य समस्याएँ, गरीबी और शिक्षा की कमी जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। वर्तमान में सरकार द्वारा महिलाओं के लिए अनेक योजनाएँ चलाई जा रही हैं। महिला मंडलों के माध्यम से महिलाएँ पारिवारिक

आय में सहयोग कर रही हैं, जिससे मुण्डा महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण सहायता मिल रही है।

परिचय

मुण्डा जनजाति झारखण्ड की प्रमुख जनजाति में से एक है। वर्तमान में 32 अनुसूचित जनजातियाँ झारखण्ड में निवास करती है। इन जनजातियों में मुण्डा जनजाति तीसरा स्थान में है। इनकी भाषा मुण्डारी है। प्रजातीय दृष्टि से मुण्डा को प्रोटो–ऑस्ट्रेलॉयड समूह में रखा गया है। इनका मुख्य निवास स्थान रांची, खूंटी, गुमला, सिमडेगा और पश्चिमी सिंहभूम जिला है। इनका आगमन दक्षिण पूर्व एशिया से झारखण्ड के छोटानागपुर में लगभग 600 ई. पूर्व में हुआ। 2011 के जनगणना के अनुसार मुण्डा जनजाति की जनसंख्या 12,29,221 है। झारखण्ड में मुण्डा जनजाति की साक्षरता दर लगभग 54.97 % से 57 % के बीच रही है। महिला साक्षरता दर लगभग 40–45 % है। झारखण्ड राज्य को जनजातिय संस्कृति का केंद्र माना जाता है। जहाँ मुण्डा, संथाल, हो, खड़िया और उराँव आदि अनेक जनजातीय निवास करती हैं। ऐतिहासिक रूप से मुण्डा जनजाति को जल, जंगल, जमीन और समुदाय आधारित जीवन पद्धति के लिए जाना जाता है। सिमडेगा जिला का बानो प्रखण्ड भौगोलिक रूप से पठारी एवं पहाड़ी जंगल क्षेत्र हैं। परंपरागत रूप से, मुण्डा समाज में महिलाएं घर और समुदाय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, उनकी सामाजिक व्यवस्था पितृसत्तात्मक है,फिर भी मुण्डा महिलाएं अपने घरों में कड़ी मेहनत करती है यहाँ की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि, वनोपज एवं व्यासाय पर आधारित है। मुण्डा जनजाति की महिलाएं अपने परिवार का पालन पोषण करने के लिए, अपने खेतों में काम करती हैं तथा अपने काम के खत्म होने के बाद दूसरों के खेतों में भी मजदूरी करती हैं। पशुपालन में गाय, बकरी, मुर्गी, सूअर पालती है। जंगलों से लाख, चिरौंजी, महुआ, लकड़ी, तेंदुपत्ता, फल आदि इकट्ठा करती है, तथा साल पत्ता तोड़ कर लाती हैं और उसका पत्तल–दोना बनाकर बाजार में बेचती हैं। इस प्रकार वे अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे केवल घरेलु कार्यों तक सीमित नहीं हैं बल्कि उत्पादन, खाद्य संग्रहण,मजदूरी में भी सक्रिय रहती हैं। इसके बावजूद उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर बनी हुई है।

अधिकांश मामलों में जमीन और संपत्ति का अधिकार पुरुषों के पास होता है, जिससे महिलाएं आर्थिक रूप से निर्भर रहती हैं। वे परिवार की आय में मदद हर तरह से करती तो हैं, लेकिन निर्णय लेने की प्रक्रिया में सम्पूर्ण भागीदारी नहीं रहती है। मजदूरी में भी महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम पारिश्रमिक मिलता है, जो लैंगिक असमानता को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त मुण्डा जनजाति महिलाओं में शिक्षा का अभाव देखने को मिलता है। जिससे गरीबी, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी और सरकारी योजनाओं की जानकारी न होना उनके आर्थिक प्रगति में बाधा उत्पन्न करता है। कई बार पारंपरिक सामाजिक सोच और रीति–रिवाज भी महिलाओं को आगे बढ़ने से रोकती हैं।

अनुसंधान का उद्देश्य

1 मुण्डा जनजाति की महिलाओं के आर्थिक निर्णय में भागीदारी को समझना।

2 मुण्डा जनजाति के आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं की पहचान करना।

3 सरकारी योजनाओं एवं स्वंय सहायता समूहों की भूमिका का मुल्यांकन करना।

4 मुण्डा जनजाति महिलाओं में भूमि स्वामित्व में अधिकार की स्थिति का अध्ययन करना।

साहित्य समीक्षा

रामशंकर वर्मा (2012) ने अपनी पुस्तक 'जनजातीय समाज और अर्थव्यवस्था' में झारखण्ड की जनजातिय महिलाओं की आर्थिक भूमिका का अध्ययन करते हुए पाया कि महिलाएं कृषि एवं वनोपज संग्रह में प्रमुख योगदान देती हैं, परन्तु निर्णय प्रक्रिया में उनकी भी भूमिका रहती है।

अल्बर्ट एक्का (2014) ने मुण्डा जनजाति का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन में मुण्डा समाज की सामाजिक संरचना, भूमि व्यवस्था एवं पारिवारिक संगठन विस्तृत वर्णन किया है। लेखक स्पष्ट करते हैं की भूमि पर पुरुष प्रधान स्वामित्व व्यवस्था का प्रतिकूल प्रभाव मुण्डा महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता पर पड़ता है।

सुरेन्द्र कुमार सिंह (2016) की पुस्तक 'जनजातिय महिलाएं और विकास की चुनौतियां' में जनजातिय महिलाओं के समक्ष उपस्थित शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार संबंधी समस्याओं का विश्लेषण किया गया हैं।

प्रभात टोप्पो (2018) ने झारखण्ड की जनजातिय अर्थव्यवस्था का क्षेत्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन में सिमडेगा जैसे वनवर्ती क्षेत्रों में वनोपज आधारित आजीविका में महिलाओं की केंद्रीय भूमिका को रेखांकित किया गया है।

सेबास्टियन कुजूर (2020) की पुस्तक जनजातीय महिलाओं का सशक्तिकरण में शिक्षा, कौशल विकास और आर्थिक अवसरों के माध्यम से जनजातिय महिलाओं के सशक्तिकरण पर बल दिया गया है। लेखक के अनुसार संरचनात्मक असमानताओं को दूर किए बिना वास्तविक सशक्तिकरण संभव नहीं है।

झारखण्ड आर्थिक सर्वेक्षण (2022) वित्त विभाग, झारखण्ड सरकार द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट में राज्य की जनजातिय जनसंख्या की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार जनजातिय महिलाओं में गरीबी, असंगठित रोजगार और आय की अनिश्चितता की समस्या व्यापक रूप से विद्यमान है।

अनुसंधान पध्दति

यह शोध अध्ययन मुख्यतः प्राथमिक और द्वितीयक दोनों स्रोतों पर आधारित है, जिनमें साक्षात्कार, अवलोकन, शोध पत्र, पुस्तके एवं पूर्वर्ती अध्ययन सम्मिलित हैं।

मुण्डा जनजाति महिलाओं की आर्थिक स्थिति :–

मुण्डा जनजाति की महिलाओं का आर्थिक जीवन बहुआयामी एवं परिश्रमी आधारित है। ये महिलाएं पारंपरिक आजीविका के साथ साथ आधुनिक आर्थिक गतिविधियों से धीरे–धीरे जुड़ रही हैं। उनका आर्थिक जीवन मुख्यतः कृषि, वनोपज संग्रह, मजदूरी तथा पशुपालन एवं लघु व्यवसायों पर आधारित है। जो बिंदुवार तरीके से दर्शायी गई है–

- **कृषि कार्यों में मुण्डा महिलाओं की भूमिका**

मुण्डा जनजाति की महिलाएं कृषि कार्यो की आधारशिला मानी जाती हैं। ये खेत की तैयारी से लेकर फसल रोपाई, बुनाई, कटाई और भण्डारण तक लगभग सभी कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं। धान मडुआ अरहर एवं सब्जियों की बीज बोना, रोपाई करना, निराई–गुड़ाई, कटाई और फसल ढोने जैसे कार्य मुख्यतः महिलाओं द्वारा ही किये जाते हैं। यहाँ की कृषि मुख्यतः वर्षा पर निर्भर है, इसलिए अनियमित मानसून का सीधा प्रभाव महिलाओं के कार्य एवं आय पर पड़ता है। वैसे तो महिलाएं कृषि श्रम में पुरुषों के सामान ही योगदान देती रहीं हैं हालाँकि विगत दो दशकों से महिलाओं की कृषि में भागीदारी अत्यधिक रूप से घटी है। नीचे दिए तालिका से इस रुझान को हम साफ तौर पर देख सकते है।

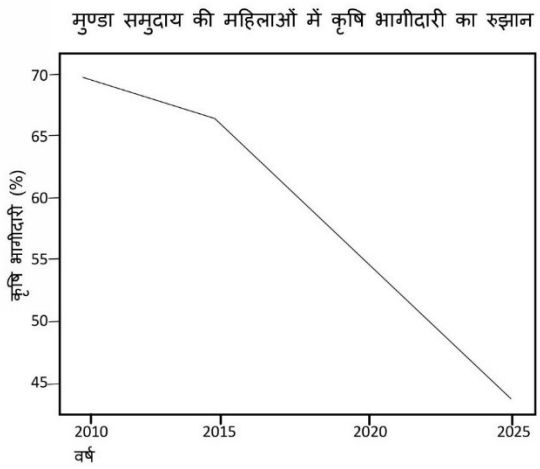

तालिकाः 1

- **वनोपज संग्रह एवं उससे जुड़ी अर्थ व्यवस्था**

वनोपज संग्रह मुण्डा महिलाओं की आजीविका का दूसरा महत्वपूर्ण आधार है। बानो प्रखण्ड के आसपास के वनों से महिलाएं महुआ, तेंदुपत्ता, साल बीज, चिरौंजी, लाह, कंद–मूल, मशरूम एवं औषधीय पौधों का संग्रह करती हैं। वनों

से प्राप्त आय मौसमी होती है और वर्ष के कुछ महीनों तक ही सीमित रहती है। महिलाएं इन उत्पादों को स्थानीय हाट–बाजार में बेचती हैं, जहाँ उन्हें उचित मूल्य नहीं मिल पता।

- **मजदूरी एवं असंगठित क्षेत्र में कार्य**

कृषि एवं वनोपज से होने वाली आय अपर्याप्त होने के कारण मुण्डा महिलाएं मजदूरी कार्य करने को विवश होती हैं। वे कृषि मजदूर, निर्माण श्रमिक, ईंट–भट्ठों तथा सड़क निर्माण जैसे असंगठित क्षेत्रों में कार्य करती हैं। इसके अतिरिक्त, मनरेगा जैसी सरकारी योजनाओं के अंतर्गत भी महिलाएं मजदूरी करती हैं जिससे उन्हें कुछ हद तक आय की सुरक्षा प्राप्त होती है। हालाँकि मजदूरी कार्यों में महिलाओं की भागीदारी अधिक है, फिर भी उन्हें पुरुषों की तुलना में कम मजदूरी दी जाती है। कार्य की अनिश्चितता, मौसमी रोजगार और शारीरिक श्रम की अधिकता महिलाओं के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। कई बार भुकतान में देरी और बिचौलियों की भूमिका भी महिलाओं की आर्थिक स्थिति को और कमजोर बना देती है।

- **पशुपालन, स्वंय सहायता समूह एवं लघु व्यवसाय**

पशुपालन मुण्डा महिलाओं के लिए आय का एक सहायक साधन है। वे परम्परागत रूप से मुर्गी, बकरी और सूअर पालन करती हैं, जिससे घरेलु आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ–साथ सीमित नकद आय भी प्राप्त होती है। हालाँकि वैज्ञानिक पध्दतियों और पशु चिकित्सा सुविधाओं के आभाव में यह क्षेत्र पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो पाया है।

मुण्डा महिलाओं की आर्थिक समस्याएं :–

सिमडेगा जिले के बानो प्रखण्ड में निवास करने वाली मुण्डा जनजाति महिलाएं आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभाती हैं, किन्तु इसके बावजूद वे अनेक गहन एवं संरचनात्मक समस्याओं से जूझ रही हैं। ये समस्याएं केवल आर्थिक नहीं हैं, बल्कि सामाजिक, शैक्षिक और संस्थागत स्तर से भी जुड़ी हुई हैं। जो इस प्रकार बिंदुवार तरीके से दर्शाया गया है–

- **भूमि पर स्वामित्व का आभाव**

मुण्डा जनजाति की महिलाओं की सबसे प्रमुख आर्थिक समस्या भूमि पर स्वामित्व का अभाव है। परम्परागत रूप से मुण्डा समाज में भूमि का अधिकार पुरुष वंश के माध्यम से हस्तातंरित होता रहा है। यद्यपि महिलाएं कृषि कार्यों में पुरुषों के समान अथवा उससे अधिक श्रम करती हैं, फिर भी भूमि का स्वामित्व उनके नाम पर नहीं होता। भूमि स्वामित्व के अभाव के कारण महिलाएं कृषि से संबंधित निर्णयों–जैसे फसल का चयन, उत्पादन का उपयोग, ऋण प्राप्ति तथा सरकारी कृषि योजनाओं का लाभ में निर्णायक भूमिका नहीं निभा पाती। इससे उनकी आर्थिक निर्भरता पुरुषों पर बनी रहती है और वे आत्म निर्भरता की दिशा में आगे नहीं बढ़ पाती। यह समस्या महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में एक गंभीर बाधा है।

- **शिक्षा एवं कौशल विकास की कमी**

शिक्षा का अभाव मुण्डा महिलाओं की आर्थिक उन्नति में एक महत्वपूर्ण अवरोध है। बानो प्रखण्ड के ग्रामीण एवं वनवर्ती क्षेत्रों में महिला साक्षरता दर अपेक्षाकृत कम है। कम उम्र में विवाह, घरेलु जिम्मेदारियां और गरीबी के कारण अनेक लडकियाँ शिक्षा पूरी नहीं कर पातीं। शिक्षा की कमी के कारण महिलाएं आधुनिक कृषि तकनीक, सरकारी योजनाओं, बैंकिंग प्रणाली और बाजार की जानकारी से वंचित रह जाती हैं। साथ ही व्यावसायिक एवं तकनीक कौशल के अभाव में वे बेहतर रोजगार या स्वरोजगार के अवसरों का लाभ नहीं उठा पातीं। परिणामस्वरूप, उनका आर्थिक जीवन सीमित और पारंपरिक दायरे में ही सिमटा रहता है।

नीचे दिए गए दो तालिकाओं के माध्यम से भारत की जनसंख्या के अनुपात में झारखण्ड राज्य के कुल जनसंख्या के साक्षरता दर को दर्शाया गया है तथा पुनः राज्य के विभिन्न जनजातियों में कुल साक्षरता के अनुपात में महिलाओं की साक्षरता दर को भी देखा जा सकता है.

तालिका 2 : कुल जनसंख्या और अनुसूचित जनजाति जनसंख्या की साक्षरता दर

श्रेणी / जनगणना वर्ष	1961	1971	1981	1991	2001	2011
कुल जनसंख्या	28.3	34.45	43.57	52.21	64.84	72.99
अनुसूचित जनजाति	8.53	11.30	16.35	29.60	47.10	58.96
अंतर	19.77	18.15	19.88	22.61	18.28	14.03

स्रोत : भारत की जनगणना, 2011

तालिका 3 : झारखण्ड में अनुसूचित जनजातियों की साक्षरता दर का वितरण–

साक्षरता दर	कुल जनजाति (राज्य)	मुण्डा	ओरांव	खड़िया	भूमिज	हो	संथाल	लोहरा	खरवार
व्यक्तियों	40.7	47.9	52.5	51.0	41.5	39.2	33.4	38.9	29.6
महिलाओं	27.2	34.9	40.8	42.2	24.0	23.9	19.5	25.0	13.9

स्रोत : रजिस्ट्रार जनरल कार्यालय, भारत

- **गरीबी एवं आय की अनिश्चितता**

गरीबी मुण्डा जनजाति की महिलाओं की जीवन स्थिति का एक स्थायी पक्ष बन चुकी है। उनकी आय मुख्यतः कृषि, वनोपज संग्रह और मजदूरी पर आधारित है, जो सभी मौसमी और अनिश्चित प्रकृति के हैं। वर्षा की अनियमितता, फसल की असफलता और वनोपज की घटती उपलब्धता महिलाओं की आय को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है। आय की अनिश्चिता के कारण महिलाएं बचत नहीं कर पातीं और विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों – जैसे बीमारी, सामाजिक अनुष्ठान या प्राकृतिक आपदा में ऋण लेने को विवश हो जाती हैं और इस तरह की ऋण गैर–आदिवासियों से लिया जाता है, जिससे उनका आर्थिक शोषण और बढ़ जाता है। इस प्रकार उनके आर्थिक जीवन में समस्या लगातार बना रहता है।

- **बाजार तक सीमित पहुँच एवं बिचौलियों का शोषण**

मुण्डा महिलाओं की एक गंभीर समस्या बाजार तक उनकी सीमित पहुँच है। वनोपज एवं अन्य उत्पादों को बेचने के लिए महिलाएं स्थानीय हाट–बाजारों पर निर्भर रहती है या बानो बाजार से लगभग 100 किलोमीटर दूर ट्रेन और बस के माध्यम से रांची के बाजारों में बेचने ले जाती है, जहाँ वे वनोपज, साग–सब्जी एवं अन्य उत्पादों को थोक में बिक्रेताओं के पास बेच देती है या दिनभर बैठ कर खुदरा बेचती है उन्हें वापसी के लिए ट्रेन पकड़ना पड़ता है या स्टेशन पर ही रात गुजारनी पड़ती है और दुसरे दिन वापसी करनी पड़ती है इससे बिक्रेता उनका लाभ उठा कर उत्पादों को कम कीमत पर खरीद लेते हैं। परिवहन सुविधाओं की कमी, बाजार संबंधी जानकारी का अभाव और संगठित व्यवस्था न होने के कारण महिलाएं अपने श्रम का उचित मूल्य प्राप्त नहीं कर पाती इससे उनकी आय कम बनी रहती है और आर्थिक असमानता और अधिक गहरती जाती है।

- **स्वस्थ्य एवं पोषण संबंधी समस्याएँ**

स्वास्थ्य एवं पोषण की समस्या भी मुण्डा महिलाओं के आर्थिक जीवन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। लगातार शारीरिक श्रम, अपर्याप्त पोषण, एनीमिया, गर्भावस्था के दौरान भी खेत में धान रोपना, काटना, बाजार–हाट और अन्य कार्य करना पड़ता है स्वस्थ्य देखभाल की कमी रहती है तथा स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच के कारण महिलाओं की कार्य क्षमता प्रभावित होती है। बीमारी की स्थिति में न केवल चिकित्सा पर अतिरिक्त खर्च बढ़ता है, बल्कि कार्य करने की क्षमता घटने से आय में भी कमी आती है। इस प्रकार स्वास्थ्य समस्याएँ महिलाओं की आर्थिक स्थिति को और अधिक कमजोर बना देती हैं।

सरकार ने महिलाओं के लिए गरीबी उन्मूलन एवं ग्रामीण विकास कार्य जैसे कई सारे योजनाएं बनाई है। इसमें से कुछ योजनाएं हैं –

1. **'VB-G RAM G' यानी विकसित भारत–गारंटी फॉर रोज़गार एवं आजीविका मिशन (ग्रामीण) –** इस योजना के तहत ग्रामीण महिलाओं को साल में 125 दिन का मजदूरी रोजगार मिलता है। जिसमें पुरुष

तथा महिलाओं के लिए समान मजदूरी दिया जाता है – जल संरक्ष्ण, खेत तालाब, कुआँ, भूमि सुधार जैसे काम मुण्डा महिलाओं की नकद आय का बड़ा स्रोत है।

2. **प्रधानमंत्री मुद्रा योजना** (PMMY) सुरक्षा एवं लघु उद्यमों हेतु बिना गारंटी ऋण उपलब्ध कराकर महिला उद्मिता को बढ़ावा देती है।
3. **वन धन विकास योजना–** विशेष रूप से वनोपज आधारित आजीविका को संगठित कर जनजातिय महिलाओं को मूल्य उपलब्धता की सुविधा प्रदान करती है।
4. **प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि** (PM–KISAN) – भूमि धारक किसानों को प्रत्यक्ष आय सहायता प्रदान करती है। भूमि महिला के नाम होने पर उन्हें सीधा लाभ प्राप्त हो सकता है।
5. **प्रधानमंत्री जन धन योजना** (PMJDY) – यह योजना ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में बहुत उपयोगी साबित हो रही है। महिलाएं अपना बैंक खाता खोल कर बचत कर सकती हैं, उन्हें इस योजना का पैसा सीधे बैंक खाता में मिलता है। वे छोटे–छोटे ऋण लेकर स्वरोजगार शुरू कर सकती हैं इससे उनकी आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता बढ़ती है।
6. **वृद्धा पेंशन योजना –** इस योजना के तहत 60 वर्ष से ऊपर की महिलाओं को प्रतिमाह 1000 रूपये सहायता राशि मिलती हैं।
7. **उज्ज्वल योजना –** इस योजना का मुख्य उद्देश्य गरीब परिवारों, विशेषकर महिलाओं को धुएँ से मुक्त सुरक्षित रसोई उपलब्ध कराना है, ताकि उनके स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार हो सके।
8. **लाडली योजना –** सरकार बालिका के जन्म से लेकर उसकी पढ़ाई तक गरीब परिवारों की बेटियों को आर्थिक सहायता देती है।
9. **किशोरी योजना –** किशोरी लडकियों के स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा और सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा यह योजना चलाई जाती है।
10. **महिला समिति योजना या स्वयं सहायता समूह** – राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत महिला समितियाँ बनाई जाती हैं, जिसमें एक समूह में 10–15 महिलाएं शामिल होती हैं। सरकार द्वारा महिलाओं को शुरुआत में रिवॉल्विंग फण्ड (परिक्रामी निधि) 15000 रूपये सहायता राशि प्रदान की जाती है। ताकि वे आजीविका के छोटे व्यवसाय शुरू कर सकें। साप्ताहिक बैठक में महिलाएं 10 रूपये बचत करती है।
11. **प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना** (PMKVY) – इस योजना के तहत युवाओं तथा महिलाओं को विभिन्न प्रकार के कौशल का प्रशिक्षण देकर उन्हें रोजगार के योग्य बनाना और आत्मनिर्भर बनाना है। यह योजना विशेष रूप से बेरोजगार युवाओं, गरीब वर्ग और ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के लिए बहुत उपयोगी है। जैसे– सिलाई, कंप्यूटर, इलेक्ट्रिशियन, प्लंबर, मोबाइल रिपेयरिंग आदि।

12. **प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना** – इस योजना के द्वारा सरकार गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं को आर्थिक सहायता देती है। ताकि उनके स्वास्थ्य और पोषण में सुधार हो सके। यह योजना विशेष रूप से पहली बार माँ बनने वाली महिलाओं के लिए लागु की गई है।
13. **माईया सम्मान योजना** – इस योजना के तहत राज्य सरकार द्वारा 18 से 50 वर्ष तक की महिलाओं को प्रतिमाह 2500 रूपये आर्थिक सहायता मिलती है।

मुण्डा जनजाति महिलाओं की समस्याएँ/चुनौतियाँ

- मुण्डा महिलाओं में साक्षरता दर कम होती है, जिससे वे अपने अधिकारों और सरकारी योजनाओं की जानकारी नहीं ले पातीं।
- बाहरी दुनिया से सीमित संपर्क के कारण जनजातिय महिलाएं आधुनिक तकनीक और नए कौशल से वंचित रह जाती हैं। डिजिटल शिक्षा, बैंकिंग, ऑनलाइन सेवाओं तक उनकी पहुँच बहुत कम हैं।
- मुण्डा जनजाति महिलाओं में समाज में उनको उतराधिकार प्राप्त नहीं है इसलिए उनका आर्थिक स्थिति और भी कमजोर हो जाती है।
- सामान काम में पुरुषों की तुलना में महिलाओं को कम मजदूरी मिलती है जिससे उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर रहती हैं।
- कुपोषण, एनीमिया और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी महिलाओं के लिए बड़ी समस्या है। जिससे वे विभिन्न संक्रमक रोगों से पीड़ित रहती हैं।
- अधिकांश जनजातीय महिलाएं ग्रामीण क्षेत्रों जंगल, पहाड़ी पर्वतीय क्षेत्रों में निवास करती हैं। उन्हें परिवहन एवं तकनीकी सुविधाओं का अभाव रहता है जिसके वजह से वे अलग रह जाती हैं।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मुण्डा जनजाति की महिलाओं का आर्थिक जीवन अत्यंत परिश्रमी, बहुआयामी एवं प्रकृति आधारित है। वे कृषि कार्यों, वनोपज संग्रह, पशुपालन, मजदूरी तथा लघु व्यवसायों के माध्यम से परिवार की आजीविका में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। बानो प्रखण्ड की महिलाएं विशेष रूप से अपने श्रम और संघर्ष के बल पर न केवल परिवार का भरण–पोषण करती हैं, बल्कि बच्चों की शिक्षा एवं सामाजिक दायित्वों को भी निभाती हैं। इसके बावजूद उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहीं है, क्योंकि वे अनेक संरचनात्मक एवं सामाजिक समस्याओं से घिरी हुई हैं।

भूमि पर स्वामित्व का अभाव, शिक्षा एवं कौशल विकास की कमी, आय की अनिश्चितता, बाजार तक सीमित पहुँच, बिचौलियों का शोषण तथा स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ उनकी आर्थिक प्रगति में प्रमुख बाधाएँ हैं। महिलाओं की श्रम भागीदारी अधिक होने के बावजूद उन्हें उचित पारिश्रमिक नहीं मिल पाता, जिससे लैंगिक असमानता और अधिक

स्पष्ट होती है। इसके साथ ही, पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था और निर्णय प्रक्रिया में सीमित भागीदारी भी उनकी आर्थिक स्वतंत्रता को प्रभावित करती है।

हालांकि, वर्तमान समय में सरकारी योजनाओं, स्वयं सहायता समूहों और कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से मुण्डा महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में सकारात्मक प्रयास किए जा रहे हैं। यदि इन योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए तथा महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, बाजार सुविधा और भूमि अधिकार से जोड़ा जाए, तो उनकी आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार संभव है। अतः आवश्यक है कि नीतिगत स्तर पर महिलाओं की भागीदारी बढ़ाई जाए और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए समुचित अवसर प्रदान किए जाएँ, जिससे मुण्डा समाज का समग्र एवं संतुलित विकास सुनिश्चित हो सके।

संदर्भ सूची

- एक्का, अल्बर्ट (2014). *मुण्डा जनजाति का सामाजिक और सांस्कृतिक अध्ययन.* रांचीः झारखंड जनजातीय अध्ययन संस्थान।
- सिंह, सुरेन्द्र कुमार (2016). *जनजातीय महिलाएं और विकास की चुनौतियाँ.* पटनाः कॉमनवेल्थ प्रकाशन।
- टोप्पो, प्रभात (2018). *झारखंड की जनजातीय अर्थव्यवस्था.* रांचीः झारखंड राज्य पुस्तक प्रकाशन।
- कुजूर, सेबेस्टियन (2020). *जनजातीय महिलाओं का सशक्तिकरणः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन.* नई दिल्लीः सेज प्रकाशन।
- चौधरी, एस. एन. (2015*). जनजातीय महिलाएँः अतीत, वर्तमान और भविष्य* । नई दिल्लीः रावत प्रकाशन।
- हांसदक, ईवा मार्गरेट (तिथि उपलब्ध नहीं). *जनजातीय महिलाओं की स्थिति।* उपलब्धः द संताल रिसोर्सेज पेज।
- अवैस, एम., आलम, टी., एवं आसिफ, एम. (2009). *जनजातीय महिलाओं का सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरणः एक भारतीय दृष्टिकोण।* इंडियन जर्नल ऑफ रूरल स्टडीज, 16(1),1–XX।
- वर्मा, रामशंकर (2012*). जनजातीय समाज और अर्थव्यवस्था. नई दिल्लीः* रावत प्रकाशन।